आनंदालय
संकलित परीक्षा–१
कक्षा : सातवीं

विषय : हिन्दी
दिनांक : २६/०६/२०१६

पूर्णांक : ५०
समय : २ घंटे

खण्ड–क

1. निम्नलिखित गद्यांश पढ़कर प्रश्नों के उत्तर दीजिए। (5)

आधुनिक मानव तेजी के साथ दौड़ रहा है। उसे अपने लक्ष्य का पता नहीं, उसे अपनी मंजिल का पता नहीं, इसलिए उसे खुद नहीं पता कि उसे कहाँ जाना है। उसकी यात्रा लक्ष्यहीन है। उसकी यात्रा का कोई उद्देश्य नज़र नहीं आता। इसका एक मुख्य कारण है कि न तो वह किसी को अपने से योग्य बनता देख सकता है और न ही किसी को अपने से आगे निकलता हुआ देखकर सहन कर सकता है। आज मनुष्य में स्वार्थ तथा व्यक्तिगत उन्नति की ऐसी भूख जाग उठी है कि इस भूख ने उसे इन्सान से हैवान बना दिया है। आज के मनुष्य का एक मात्र लक्ष्य रह गया है 'जैसे–तैसे दूसरों से आगे निकलना, दूसरों को पीछे छोड़ना और यही नहीं उन्हें हानि पहुँचाने से भी पीछे न हटना।' आज का मानव दूसरों से आगे बढ़ने के लिए अपनी इन्सानियत को भूल बैठा है, अपने मानवीय मूल्यों को छोड़ बैठा है तथा अनुचित साधनों को अपना रहा है। मनुष्य सोचता है कि आज के संदर्भ में वही सबका स्वामी होगा, वही सब पर नियंत्रण करेगा, जो सबसे आगे होगा, जिसके पास सबसे अधिक धन–संपदा होगी, सबसे अधिक ऐश्वर्य होंगे, इसीलिए वह दूसरों को कुचलकर भी सबसे आगे निकल सकता है।

(क) आज के मानव की यात्रा लक्ष्यहीन क्यों है ?

(ख) आज के मानव की लक्ष्यहीन यात्रा का मुख्य कारण क्या है ?

(ग) आज के मनुष्य में किस प्रकार की भूख जगी है ?

(घ) 'जैसे–तैसे' दूसरों से आगे निकलने का क्या आशय है ?

(ङ) गद्यांश का उचित शीर्षक लिखिए।

खण्ड–ख

2. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर निर्देशानुसार दीजिए –

(क) अलंकार का एक उदाहरण लिखिए।	(अनुप्रास अलंकार)	(1)
(ख) 'अंकगणित के प्रश्न–पत्र में कुल पाँच प्रश्न पूछे गए थे।'	(अनुनासिक और अनुस्वार शब्द छाँटिए।)	(1)
(ग) 'पेड़ से पत्ता गिरा।'	(कारक लिखिए।)	(1)
(घ) तुम्हारी बात सुनते–सुनते कान पक गए ।	(अशुद्धिशोधन कीजिए।)	(1)
(ङ) अधिनायक, दयावान	(शब्दों से उपसर्ग/प्रत्यय छाँटकर लिखिए)	(2)
(च) लघु + उत्तर , गणेश	(संधि विच्छेद और संधि कीजिए।)	(2)
(छ) देशभक्त, अमीर–गरीब	(समास विग्रह कर भेद लिखिए।)	(2)

खण्ड–ग

3. गद्यांश पढ़कर प्रश्नों के उत्तर दीजिए–

जगदीशपुर के जंगलों में 'बसुरिया बाबा' नाम के एक सिद्ध संत रहते थे। उन्होंने ही कुँवर सिंह में देशभक्ति एवं स्वाधीनता की भावना उत्पन्न की थी। उन्होंने बनारस, मथुरा, कानपुर, लखनऊ आदि स्थानों पर जाकर विद्रोह की सक्रिय योजनाएँ बनाईं। वे 1845 से 1846 तक काफ़ी सक्रिय रहे और गुप्त ढंग से ब्रिटिश हुकूमत के खिलाफ़ विद्रोह की योजना बनाते रहे। उन्होंने बिहार के प्रसिद्ध सोनपुर मेले को अपनी गुप्त बैठकों की योजना के लिए चुना। सोनपुर के मेले को एशिया का सबसे बड़ा पशु मेला माना जाता है। यह मेला कार्तिक पूर्णिमा के अवसर पर लगता है। यह हाथियों के क्रय–विक्रय के लिए भी विख्यात है। इसी ऐतिहासिक मेले में उन दिनों स्वाधीनता के लिए लोग एकत्र होकर क्रांति के बारे में योजना बनाते थे। 25 जुलाई 1857 को दानापुर की सैनिक टुकड़ी ने विद्रोह कर दिया और सैनिक सोन नदी पार कर आरा की ओर चल पड़े। कुँवर सिंह से उनका संपर्क पहले से ही था। इस मुक्तिवाहिनी के सभी बागी सैनिकों ने कुँवर सिंह का जयघोष करते हुए आरा पहुँचकर जेल की सलाखें तोड़ दीं और कैदियों को आज़ाद कर दिया। 27 जुलाई 1857 को कुँवर सिंह ने आरा पर विजय प्राप्त की। सिपाहियों ने उन्हें फ़ौजी सलामी दी। यद्यपि कुँवर सिंह बूढ़े हो चले थे परंतु वह बूढ़ा शूरवीर इस अवस्था में भी युद्ध के लिए तत्पर हो गया ओर आरा क्रांति का महत्त्वपूर्ण केंद्र बन गया।

(क) जगदीशपुर के सिद्ध संत का नाम क्या था और उन्होंने वीर कुँवर सिंह के मन में कौन–सी भावना जागृत की ? (1)

(ख) वीर कुँवर सिंह ने सोनपुर के मेले को ही गुप्त बैठकों के लिए क्यों चुना ? कारण सहित उत्तर लिखिए। (2)

(ग) मुक्तिवाहिनी के सैनिकों ने जेल की सलाखें किस उद्देश्य की पूर्ति के लिए तोड़ी और उसका क्या परिणाम हुआ ? (2)

4. निम्नलिखित में से किन्हीं **दो प्रश्नों** के उत्तर लिखिए– (30 से 35 शब्दों में) (6)

(क) रहीम के दोहों में से आपको सर्वाधिक ज्ञानवर्द्धक दोहा कौन–सा लगा और क्यों ? सोदाहरण लिखिए।

(ख) आश्रम में खेतीबाड़ी और मोची के औज़ार खरीदने पर गांधी जी क्यों जोर देते थे ? इन कार्यों से वे समाज को क्या संदेश देना चाहते थे ? तर्क सहित उत्तर लिखिए।

(ग) अप्पू का सड़क पर खेलना तथा कंचे उठाना क्या उचित था ? क्या इसके लिए माता–पिता या संरक्षक जिम्मेदार हैं ?

5. धनराज पिल्लै ने साक्षात्कार के दौरान अपनी गरीबी से संबंधित प्रश्नों के उत्तर निःसंकोच दिए। यदि आप उनके स्थान पर होते तो अपनी स्थिति इसी तरह स्पष्ट करते या कुछ बातें छिपाते। अपने विचार स्पष्ट कीजिए। (4)

6. **(क)** वाक्य पूरे कीजिए– (3)

(i) सेठ माधवदास मित्रों के साथ .....।

(ii) विप्लव गायन के माध्यम से कवि परिवर्तन की .....।

(iii) आँख में तिनका पड़ने के बाद घमंडी का ....।

(ख) नीचे लिखे शब्दों में से किन्हीं **दो** शब्दों से **दो–दो नए शब्द** बनाइएः– (2)

भारत, मानव, प्रेम

खण्ड–घ

7. दिए गए चित्र को ध्यान से देखकर अपने मन में उभरे विचारों को अपनी भाषा में प्रस्तुत कीजिए– (लगभग 30–35 शब्दों में) (5)

8. रक्षाबंधन के त्योहार के दिन भाई बहन के बीच हुई बातचीत को संवाद–शैली में लिखिए। (5)

खण्ड–ङ

9. **मुक्त पाठ**

मुक्त पाठ पढ़कर प्रश्नों के उत्तर लिखिए–

हम खानपान से भी एक–दूसरे को जानते हैं। इस दृष्टि से देखें तो खानपान की नयी संस्कृति में हमें राष्ट्रीय एकता के लिए नए बीज भी मिल सकते हैं। बीज भलीभाँति अंकुरित होंगे जब हम खानपान से जुड़ी हुई दूसरी चीज़ों की ओर भी ध्यान देंगे। मसलन हम उस बोली–बानी, भाषा–भूषा आदि को भी किसी–न–किसी रूप में ज़्यादा जानेंगे, जो किसी खानपान–विशेष से जुड़ी हुई है।

इसी के साथ ध्यान देने की बात यह है कि 'स्थानीय' व्यंजनों का पुनरुद्धार भी ज़रूरी है जिन्हें अब 'एथनिक' कहकर पुकारने का चलन बढ़ा है। ऐसे स्थानीय व्यंजन केवल पाँच सितारा होटलों के प्रचारार्थ नहीं छोड़ दिए जाने चाहिए। पाँच सितारा होटलों में वे कभी–कभार मिलते रहें, पर घरों–बाज़ारों से गायब हो जाएँ तो यह एक दुर्भाग्य ही होगा। अच्छी तरह बनाई–पकाई गई पूड़ियाँ–कचौड़ियाँ–जलेबियाँ भी अब बाज़ारों से गायब हो रही हैं। मौसमी सब्ज़ियों से भरे हुए समोसे भी अब कहाँ मिलते हैं ? उत्तर भारत में उपलब्ध व्यंजनों की भी दुर्गति हो रही है।

अचरज नहीं कि पहले उत्तर भारत में जो चीज़ें गली–मुहल्लों की दुकानों में आम हुआ करती थीं, उन्हें अब खास दुकानों में तलाशा जाता है। यह भी एक कड़वा सच है कि कई स्थानीय व्यंजनों को हमने तथाकथित आधुनिकता के चलते छोड़ दिया है और पश्चिम की नकल में बहुत सी ऐसी चीज़ें अपना ली हैं, जो स्वाद, स्वास्थ्य और सरसता के मामले में हमारे बहुत अनुकूल नहीं हैं।

हो यह भी रहा है कि खानपान की मिश्रित संस्कृति में हम कई बार चीज़ों का असली और अलग स्वाद नहीं ले पा रहे। अकसर प्रीतिभोजों और पार्टियों में एक साथ ढेरों चीज़ें रख दी जाती हैं और उनका स्वाद गड्डमड्ड होता रहता है। खानपान की मिश्रित या विविध संस्कृति हमें कुछ चीज़ें चुनने का अवसर देती है, हम उसका लाभ प्रायः नहीं उठा रहे हैं। हम अकसर एक ही प्लेट में कई तरह के और कई बार तो बिलकुल विपरीत प्रकृतिवाले व्यंजन परोस लेना चाहते हैं। इसलिए खानपान की जो मिश्रित–विविध संस्कृति बनी है– और लग यही रहा है कि यही और अधिक विकसित होनेवाली है–उसे तरह–तरह से जाँचते रहना ज़रूरी है।

(क) किन्हीं दो राज्यों के दो–दो प्रमुख व्यंजनों के नाम बताइए। (1)

(ख) प्रीतिभोज के समय सामूहिक रुप से बैठकर खाना अच्छा लगता है या बुफ़े सिस्टम का तरीका, कारण सहित उत्तर लिखें। (2)

(ग) स्कूल टिफिन में फास्ट फूड ले जाना उचित है या अनुचित तर्क सहित उत्तर लिखिए। (2)